International Journal in Management and Social Science
Volume 09 Issue 7, July 2021 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 7.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal Web of Science ResearcherID JTT-2321-1784

फतेहाबाद जिले के वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा संस्थानों के छात्रों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता एवं उनके कारणों का अध्ययन

Dr. Rajesh Kumar, Assistant Registrar,
Shri Vishwakarma Skill University Palwal Haryana

परिचय

शिक्षा का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। मानव जन्म से मृत्यु पर्यंत किसी न किसी रूप में शिक्षा ग्रहण करता रहता है। स्वामी दयानंद के अनुसार, "बच्चा माता के गर्भ से शिक्षा ग्रहण करना प्रारंभ कर देता है।" जीवन की बगिया की सुंदरता शिक्षा के बिना कुरूप ही दिखाई देती है। आँखें होते हुए भी मानव अंधा हो जाता है। मानव रूपी चोले में वह पशु और राक्षस जैसा व्यवहार करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षा शब्द इतना गहरा है जिसे शब्दों में अंकित करना बहुत कठिन है। इसकी महत्ता का अनुभव किया जा सकता है, अभिव्यक्त नहीं।

मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन मानी जाती है। मानव का विकास काफी हद तक शिक्षण क्रिया पर निर्भर करता है, क्योंकि इसी के द्वारा उसमें विभिन्न प्रकार के व्यावहारिक परिवर्तन लाए जा सकते हैं। विभिन्न विद्वानों का मत है कि शिक्षा एक निरंतर रूप से चलने वाली प्रक्रिया होती है, जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को पूर्ण रूप से विकसित किया जा सकता है। शिक्षा की सहायता से ही एक मनुष्य में विभिन्न प्रकार की अंतर्निहित शक्तियों को विकसित किया जा सकता है। वास्तव में, शिक्षा केवल विद्यालयों में ही प्रदान नहीं की जाती बल्कि एक मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक विभिन्न प्रकार की शिक्षा प्राप्त करता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि वह सभी क्रियाएँ जिनके माध्यम से मनुष्य किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त करता है या समाज में रहने के ढंग को सीखता है, उसे शिक्षा कहा जाता है।

भारतीय समाज

भारतीय समाज ऐतिहासिक उन्नति, भौगोलिक विभिन्नता, सामाजिक भिन्नता, पोशाक, भाषा, संवाद, धर्म, विचारधारा तथा जीवन के दर्शन शास्त्रों के कारण स्वभाव से जटिल है। विभिन्नता और समग्रता भारतीय समाज की विशेषता है। परंतु इसके साथ ही इसके कुछ संबंध और सीमाएँ भी हैं।

किसी राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था उसके समाज की संस्कृति पर आधारित होनी चाहिए। भारतीय समाज की संरचना वर्तमान में भूतकाल की अपेक्षा अधिक तर्कशील होगी। भारतीय समाज उस विशाल सागर के समान है जो विभिन्न संस्कृतियों रूपी नदियों को अपने में विलीन करता रहा है। भारतीय समाज के संदर्भ में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा है, "सागर में अनेक नदियाँ आकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करती हैं, लेकिन वे अपना स्वरूप उसी में आत्मसात करके विलीन हो जाती हैं।" इस प्रकार, भारतीय समाज ने विभिन्न संस्कृतियों को अपने में आत्मसात किया और इस प्रक्रिया के कारण अपने स्वरूप को बनाए रखा। हमारी संस्कृति की जड़ें गहरी रही हैं, इसी कारण बदलते हुए परिवेश में यह अपने स्वरूप को आज तक बनाए हुए है।

भारत में वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा

कक्षा 11वीं से 12वीं कक्षा तक की शिक्षा को वरिष्ठ माध्यमिक स्तर की शिक्षा कहा जाता है। यह शिक्षा प्राथमिक शिक्षा के बाद और स्नातक स्तर से पहले दी जाती है। माध्यमिक हाई स्कूल में कक्षा 6 से 10 तक की व्यवस्था होती है। वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के स्कूलों में कक्षा 11 से 12वीं तक की शिक्षा दिए जाने का प्रावधान है। वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों की आयु क्रमशः 16 से 18 वर्ष तक होती है।

अनुशासन का अर्थ

अनुशासन का शाब्दिक अर्थ है "आत्म-नियंत्रण" या "आत्म-संयम"। इसमें व्यक्ति अपने आवेगों पर नियंत्रण रखने का प्रयास करता है। अनुशासन के लिए अंग्रेज़ी में "डिसिप्लिन" शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसका हिंदी में अर्थ है–मानसिक अथवा नैतिक प्रशिक्षण द्वारा नियंत्रण में लाना। जीवन को व्यवस्थित रूप से संचालित करने का एक महत्वपूर्ण साधन अनुशासन है। नदी अपने किनारों के बीच बहती रहे तो वह स्वच्छ तथा उपयोगी समझी जाती है। यदि नदी किनारों को तोड़ दे तो बाढ़ का कारण बनती है, उत्पात मचाती है और भय उत्पन्न करती है। इसी प्रकार यदि व्यक्ति अनुशासन की सीमाओं में जीवन यापन करे तो उसे सभ्य समझा जाता है, यदि वह उन सीमाओं का उल्लंघन करे तो उसे असभ्य, आवारा, दुष्ट और समाज के लिए अनुपयोगी समझा जाता है।

अनुशासनहीनता

अनुशासनहीनता की समस्या केवल भारत तक ही सीमित नहीं बल्कि वह विश्वव्यापक है। वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी कार्य से बचने का प्रयास करते हैं और अपनी अनिच्छा के कारण कक्षा के वातावरण को बिगाड़ते हैं। वे जनता की संपत्ति को नुकसान पहुंचाकर, छोटी-छोटी बातों पर विवाद खड़ा करके और बात-बात पर हड़ताल की धमकी देकर अनुशासनहीनता प्रदर्शित करते हैं। यही कारण है कि आज देश के कोने-कोने से अनुशासन की आवश्यकता की आवाज निरंतर उठ रही है। वर्तमान समय में विद्यालयों और विश्वविद्यालयों का वातावरण पूरी तरह शैक्षिक नहीं रह गया है। आधे दिन शिक्षण संस्थानों में गुटबंदी और राजनीतिकरण का प्रभाव बढ़ता जा रहा है, जिससे अनुशासन की स्थिति और अधिक गंभीर हो रही है।

अध्ययन का औचित्य

मानवता इस दोराहे पर खड़ी है। मानव धर्म के बुनियादी मूल्य जैसे शांति, सौहार्द, सहिष्णुता, त्याग, प्रेम व स्नेह आज कमजोर होते जा रहे हैं। भौतिकवाद की अंधी दौड़ में आज विश्व इसी प्रवृत्ति के साथ मानवता और नैतिक मूल्यों को पीछे छोड़ रहा है। भारत ने विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में असाधारण उन्नति की है, जिससे उसकी गिनती विश्व के प्रमुख देशों में होती है। किंतु इस उन्नति का दूसरा पहलू निराशाजनक है। प्राचीनकाल की गौरवशाली धरोहर और भारतीय संस्कृति हमें वसुधैव कुटुंबकम् का संदेश देती है, फिर भी हम धर्म, जाति, भाषा और क्षेत्रवाद के आधार पर विभाजित रहते हैं। गरीबी, बेरोजगारी, कुपोषण, सामाजिक अन्याय और अकाल जैसी समस्याएं विद्यार्थियों को अनुशासनहीनता की ओर प्रेरित करती हैं।

समस्या कथन

"फतेहाबाद जिले के वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा संस्थानों के छात्रों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता एवं उनके कारणों का अध्ययन।"

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. **फतेहाबाद जिले के वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा संस्थानों के विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता के कारणों का अध्ययन करना।**
2. **शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता के तुलनात्मक कारणों का अध्ययन करना।**
3. **शहरी क्षेत्र के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं में अनुशासनहीनता के विभिन्न कारणों की तुलना करना।**
4. **ग्रामीण क्षेत्र के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं में अनुशासनहीनता के विभिन्न कारणों की तुलना करना।**

परिकल्पना

1. **फतेहाबाद जिले के शहरी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता के कारणों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।**
2. **फतेहाबाद जिले के ग्रामीण वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता के कारणों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।**
3. **फतेहाबाद जिले के शहरी और ग्रामीण वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता के कारणों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।**

अध्ययन की परिसीमा

यह अध्ययन फतेहाबाद जिले के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों तक सीमित रखा गया। इसमें 11वीं और 12वीं कक्षा के 50 शहरी और 50 ग्रामीण छात्रों को अध्ययन की जनसंख्या के रूप में लिया गया।

अध्ययन की अनुसंधान विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

अध्ययन की जनसंख्या

इस अध्ययन में फतेहाबाद जिले के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों को शामिल किया गया।

अध्ययन नमूना

इस शोध में फतेहाबाद जिले के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के 50 शहरी और 50 ग्रामीण विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए चुना गया, जिनमें 25 छात्र और 25 छात्राएँ शामिल थीं।

अध्ययन उपकरण -

प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययनकर्ता ने आंकड़ों का संग्रह करने के लिए स्वयं निर्मित प्रश्नावली को उपकरण के रूप में प्रयोग किया।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय पद्धतियाँ:

प्रस्तुत शोधकार्य में आंकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य, प्रमाणिक विचलन एवं टी-टेस्ट तथा प्रतिशत विधि का प्रयोग किया गया।

अध्ययन के परिणाम एवं निष्कर्ष-

1. **आंकड़ों के निरीक्षण से स्पष्ट हो जाता है कि फतेहाबाद जिले के वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा संस्थानों के शहरी क्षेत्र के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के छात्र व छात्राओं में अनुशासनहीनता के कारणों में अंकों की अभिवृत्ति में समानता पाई गई एवं आंकड़ों की गणना द्वारा टी का मान 1.21 है, जो कि सारिणी में 0.01 तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीमान 2.682 तथा 2.011 से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना सार्थकता के दोनों स्तरों (0.01 तथा 0.05) पर स्वीकृत होती है।**

निष्कर्ष

आंकड़ों के विश्लेषण में पाया गया कि फतेहाबाद जिले के वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा संस्थानों के शहरी क्षेत्र के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के छात्र व छात्राओं में अनुशासनहीनता के कारणों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2. **आंकड़ों के निरीक्षण से स्पष्ट हो जाता है कि फतेहाबाद जिले के वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा संस्थानों के ग्रामीण क्षेत्र के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के छात्र व छात्राओं में अनुशासनहीनता के कारणों में अंकों की अभिवृत्ति में समानता पाई गई तथा आंकड़ों की गणना द्वारा टी का मान** 0.96 **है, जो कि सारिणी में** 0.01 **तथा** 0.05 **सार्थकता स्तर पर सारणीमान** 2.682 **तथा** 2.011 **से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना सार्थकता के दोनों स्तरों (**0.01 **तथा** 0.05) **पर स्वीकृत होती है।**

निष्कर्ष

आंकड़ों के विश्लेषण में पाया गया कि फतेहाबाद जिले के वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा संस्थानों के ग्रामीण क्षेत्र के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के छात्र व छात्राओं में अनुशासनहीनता के कारणों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3. **आंकड़ों के निरीक्षण से स्पष्ट हो जाता है कि फतेहाबाद जिले के वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा संस्थानों के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता के कारणों में अंकों की अभिवृत्ति में समानता है तथा आंकड़ों की गणना द्वारा टी का मान** 1.97 **है, जो कि सारिणी में** 0.01 **तथा** 0.05 **सार्थकता स्तर पर सारणीमान** 2.686 **तथा** 1.984 **से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना सार्थकता के दोनों स्तरों (**0.01 **तथा** 0.05) **पर स्वीकृत होती है।**

निष्कर्ष

आंकड़ों के विश्लेषण में पाया गया कि फतेहाबाद जिले के वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा संस्थानों के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता के कारणों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शैक्षिक निहितार्थ

1. **इस अध्ययन से विद्यालय के प्रशासन को यह फायदा होगा कि अनुशासनहीनता से छात्रों को अवगत कराए तथा उनमें उच्च मूल्यों का विकास करे।**
2. **शिक्षक भी अनुशासनहीनता को विद्यालय के प्रांगण में दूर करने का प्रयास करेंगे तथा इसे दूर करने के लिए छात्रों में नेतृत्व का विकास करेंगे।**
3. **इस अध्ययन में मूल्यों की गिरावट को दूर करने हेतु छात्रों के सामाजिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देकर अनुशासनहीनता के स्तर को कम किया जाएगा।**
4. **यह अध्ययन छात्रों के लिए दिशानिर्देश का काम करेगा-, जिससे छात्र अपनी अनुशासनहीनता के कारणों को दूर करने हेतु शिक्षकों द्वारा किए गए प्रयासों का पालन कर सकेंगे।**
5. **इस अध्ययन के उपरांत विद्यालयों में राजनैतिक हस्तक्षेप को कम किया जाएगा।**

आगामी शोध के लिए सुझाव

1. **विद्यालय स्तर के छात्र एवं छात्राओं में अनुशासनहीनता के कारणों एवं स्वरूप का अध्ययन किया जा सकता है।**
2. **केंद्रीय विद्यालय एवं नवोदय विद्यालय के अनुशासनहीनता स्तर एवं कारणों का अध्ययन किया जा सकता है।**
3. **केंद्रीय विद्यालय एवं नवोदय विद्यालय के अनुशासनहीनता स्तर एवं कारणों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।**
4. **शिक्षा महाविद्यालय एवं अन्य महाविद्यालयों के अनुशासनहीनता स्तर एवं कारणों का अध्ययन किया जा सकता है।**
5. **राज्य स्तर पर छात्रों में अनुशासनहीनता स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।**